

प्रवेश सं०

१२

विषयः

नेद

क्रम सं०

प्रत्यकार

३११२५

नाम

निरुद्धम्

(पूर्ववर्द्धकम्)

पत्र सं०

१-२५, ४८, ७४

श्लोक सं०

आदेश सं० (पत्रों)

३५

पत्र सं० (पत्रों)

लिपि दे०

आकार

७५५५५

आकार

८-७ X ३-३

वि० दिनांक

002163

अ. प्र. १३

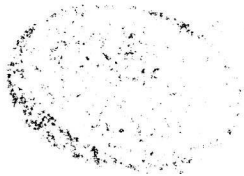
(२)

शी० सं० नू० सं० ११-११-११ सं० ११-११-११ सं० ११-११-११

(२)

पुस्तक सं० ११-११-११

92 100 100 100 92



Indira Gandhi National
Centre for the Arts

11211

॥३॥ जगिजा पुन ३॥ ७॥ समाप्तायः समाप्तार्तः स्या रव्यातव्यं सप्रिगै समाप्तायैनि
 धणवइ सानुस्तेनि स्यैदवः क समाप्तिगमाइ जे मवैति कुं दोभ्यः समाहृत्य समाहृत्य
 समाप्ता तास्ते निगीत करवसंतो निगमनासि धेदवः ३॥ अन्तर्यामि पदमवो दिवा रु
 नना देवस्यः समाहृत्य मवैतिय द्वा समाहृत्य मवैतिय द्वा समाहृत्य मवैतिय द्वा समाहृत्य
 तास्तेनामा रव्याते योप सर्ग निपाता प्रकृत नैमा निमवैतिय जेतैना मा रव्यातयोर्त
 कोणमदिगो निमावपु नानमा रव्याते सल प्रकृतानि ना मा रव्याते योप सर्ग निपाता प्रकृत
 नमवैतः सवैपरी भर्तै मा रव्याते ना वष्ट अजति पलली कपजम अमत्यप ॥३॥
 वर्गपर्यंतम् तै सल भर्तै सलनामभिर्ब्रह्माः पक्रिरित्य दः ३॥ तिसत्त्वाना

ने-२
॥॥

लोतेनेव व्याख्यातः प्रतिलोमं च नश्यतीत्यपर जावस्यांतमावहेन सर्वभावमा
 वहेन प्रतिनिधिति ॥॥ अतो न्येभावविकारा एतेषामेव विकारा नवंतीति
 हस्माह ते यथा वचनमन्यहितस्याननिर्वहानुपसर्गो अर्थातिरादुरिति
 शाकटायनो नामाख्यातयोस्तु कर्त्तव्यसंयोगद्योतकान्वंतीत्युज्ज्वला
 पदार्थान्वंतीति गार्हस्त्येष्ट्युपदाधिरादुरिमेतन्नामाख्यातयोर्ग
 विकृत्यानाडत्यवगिथे प्रपरेत्येतस्य प्रातिलोम्यमन्तीत्यामिसुख्यं प्रती
 तितस्य प्रातिलोम्यमिति सुदृश्यं प्रतीतितायेति दुर्दृश्येतयोः प्रातिलो

पु.४

म्यन्यवतिप्रहाभीघोडादिस्तयोः प्रातिलोम्यं समित्यकीमायैव पत्यतस्य प्राति
 लोम्यमन्तीति सादृश्यापरमावृत्तपीति सैव सर्ममुपलक्ष्यजनैपरीति रलोता नमपीत्य
 परितार्यमंश्चयैव वमुज्ज्वलावचनार्थाया हुंस्तउपांस्तय्या ॥॥ अथ निपाताउक्ता
 वचनद्वयं पुनिपतैत्युपमार्थपिकमोपसंग्रहार्थे पिपदपरणास्तथा मनेवत्वा
 रं उपमार्थमवैतीति मापायी नान्वध्यायैवाभिरिचंद्रवेतिनेति प्रतिषेधा
 थीयोना सायां मुत्तयमन्वध्यायै नदं देवममंसतेति प्रतिषेधा थीयः पुरस्ता
 दुपाचारस्तस्य यत्प्रतिषेधति दुमंदासनरायाभिरूपमा थीयं उपरिष्ठादुपा
 चारंस्तस्य येनोपमिमीते विदित्येषोनेककर्माचार्यश्चिदिदं ह्यादिति पत्ता

नैः ५

॥ ३॥

निचखनु यत्ता खनु कतमथापि पद परणी रयै खनु तमस्तु वेति शश्वदि निवि
विकिसाधी योभा पायी शश्वदेवमित्यनु एष्ट एवश श्वदिस्य स्वये दृष्टं नूनमि
मिति विवि विकिसाधी योभा पायी मम यमन ध्यायं निविकिसाधी यश्वपद पर
ण श्वगस्ये रंश यरु विनिर्गुण मरुजः संप्रिस्ता जकार स रंश रस्य परि देव यो व
के ॥ ॥ ॥ नूनमस्मि नो श्वः कस्तु दे द य द रूत ॥ अन्यस्य विज ममि स नरे रण म
ताधी ते विन श्वति ॥ नूनमस्मि यत न नो एव श्वस्त नम चास्मि य विधुरि यो ॥ ॥ ॥
नामधेयं यो न त इति सत श्व उपाशं सनी यः कालो हो ही नः कालः कस्तु दे द य

दय द रूत ॥ कस्तु दे द य द रूत मिंदमपीतर द रूत तमस्तु तमिति वान्यस्य विज
ममि स नरे रण ममि स नरे रण ममि स नरे रण ममि स नरे रण ममि स नरे रण ममि स नरे रण
ध्या ते विन श्वत्यो ध्यातममि प्रते मथापि पद परण ॥ ॥ ॥ नूनमैसाते प्रतिवरं
रि त्रे दु ही य दि रू द क्षि ण म चो नी ॥ शि हा स्तो त त्यो मा धु ग्न गो नो ब ह द दे म वि
दये सु वी राः ॥ साते प्रति दु ग्धा वरं न रि त्रे व रो व धि त व्यो म व ति न रि ता ग रि ता द
क्षि ण म चो नी म च व ती म व मि ति ध न ना म धे यं मै ह ते दा न क र्म णो द क्षि ण द ह
तेः सम र्द्ध य ति क र्म णो व र्द्ध य ती त्यपि वा प्र द क्षि ण ग म नो दि श म

मि प्रत्यदिग्यस्त प्रकृतिर्दक्षिणे हस्तो दक्षतेरुत्तरास्तु कर्मणो दाशते वी स्या दानक
मंणो हस्तो हस्तः प्राशु हं ननं देहि स्नातव्यः कामा मां स्मानति दे ही मां स्मानति हा
य दाशगो नो स्तु हं हृदय मस्वे वे दने न गाम जते वृहदिति मरु तो ना मधेय प
रिवृद्धं स वति वीरवतः कल्याण वी रा वा वी रो वीर यस्य मित्रान्वित वा स्या कृति कर्मणो
वीरयते र्वा सीमिति परिय हा र्थो वा पद पूर णो वा प्रसी मादित्यो अस्मत्तत् प्राश
ज्जदिति वा प्राश जत्सर्वत इति वा धि सी मतः सुरु वेवेन ज्योवरिति च वा द का स वेत
आदित्यः सुरा व आदित्य रश्मयः सुरा व ना ज्यो वा सी मे त्येत द नर्थक मप वेधमा ॥२॥
नृप वेध मा द दीत पे व सी क मां ली सी मः सी मतः सी मा तो म र्था दातः सी मा म र्था दा

विषयति देशावितिव उति विनिय हा र्थो ये सर्वना मानु दात न र्दना मेत्ये के ॥३॥ नृ चो
नः पो ध मा स्ते पु पु धाना य च त्वो गा पति श क् री पु ब्रह्मा लो व द नित्वा त विद्या युजस्य मा
नो विमिमीत उत्तरे इत्ये त्वि कर्म णो विनियोग भा व पृं स वा मेकः पो ध मा स्ते पु पु धा नो
त ग र्च नी गा य न्मै को गा यति श क् री पू द्रा ता गा य त्रं गा य ते स्तुति कर्म णः श क र्म
अ चर श को ते स्त प या मि न्त्र म श क ये तु त क्क री णा श क री त्वं मिति विज्ञा यत ब्रह्मे
जाते को ज्ञा ते विद्यां व द ति ब्रह्मा सर्व विद्यः सर्व वेदितु मर्ह ति ब्रह्मा परि वृत्तः श्रु त तो ब्रह्म प
नर रिवृद्धं सर्व तो यं स्य मा नो विमिमीत ए को ध य र्ध र्य र्ध र्य र्ध र्य नै त्थ ध रस्य नै ता ध
र काम यत इति गोपि वा नी या ने युरु प वे धो ध र इति यज्ञ नाम ध र ति हि सा क मा तस्य

नै०८

॥६॥

तिषेयो निपात इत्येकैतत्कथमनुदात्तप्रकृतिनामस्योद्दृष्ट्यनुभवस्य तत्त्वं सर्वस्य स्थि-
रपीतमाहुरिति द्वितीयायां मुतोत्त्वस्मैतन्विसस्त्र इति चतुर्थ्यां तथापि प्रथमा बहु-
वचने ॥ ८ ॥ अथैतः कर्णवैतः सखायो मनोजवेषसमावभूतः ॥ आदद्यात् उपक-
क्षासत्त्वे कदाचिदस्तात्यात्त्वे दृष्टं ॥ अक्षिमतः कर्णवैतः सखायो हिनोष्टरनक्त-
रित्याग्रायणस्मादेते यत्कतरे इव सवत इति हविजायते कर्णः कंतते भिक्तनक्षत्रो-
नवत्येकतेरित्याग्रायणं च तीव्रत्वे उदगं तामिति हविजायते मनसो पत्रवेषसमा-
वभूतुरास्य दद्यात् अपर उपकक्ष दद्यात् अपर आस्य मस्यते रास्यं देत एन दन्तमिति ॥ ६ ॥
वा दक्ष दध्यते स्ववतिकर्मणो दस्यते वास्यादितस्तनरै सवति प्रस्ते या कदाचिदेकै-

६

मिनिमंजीव
नाय ॥ ५

प्रस्ते या दृष्टिरे स्नाना हा कदाचिदक्षकर्मणो ह्लादते वास्या ह्यतीतावकर्मणो या-
पिसमुच्चयार्थे सवति पयो या इव त्वदाश्विनमाश्विनैव पय्यायाश्चैत्यथेष दक्षे र्यमि-
ताक्षरे पुमं ये पुवाक्यक्षरणा आग कंतिपदक्षरणास्तमिताक्षरे धनर्यकाः कमीसि-
दिति ॥ १० ॥ निस्त्रक्रासश्चिदिन्नरो भूरितो कारकादिब ॥ विष्कथ्ये तोव वाक्षिरे शिशिर-
जीवनाय कौशिशिरे शृणातः शस्माते वा ॥ एमे नै सन्नतास्तता अस्य ते नै स्मता तमिदर्थ-
तु नो गिरः ॥ तं वर्यं ये तु नो गिरः ॥ स्ततयो गिरोग्रणातः ॥ अयमुते समतसि ॥ अयेते सम-
तसी कोपि दृश्यते सुविदुरि वविजायते इवायापि न स्पष्ट इत्येते न संप्रयुज्य-
ते परिज्ञेय ॥ १० ॥ हविभिरे के स्वरितस्स चैते स्तन्वैत एके सवने पुसोमान् ॥ शर्वे

नै० ४

॥३॥

न देत उत दक्षिण भिने निस्सार्थे सो नर के पता म॥ इति नर के न्य र के नी वै र्ग म नै नास्मि
 नम एं स्था नम मय मय स्त्री ति वा था पित वै त्ये प द दि त्ये ते नु सं प्र यु ज्ये त नु ट छे न वै त्पुरां
 वि चं ता नि सुरु रा सु नो ते रं व मु द्रा व जे ष धे षु नि प तं ति त उ पे शि त व्या ड ॥ १३ ॥ इ ती म नि
 न त्ना रि प द ता ता न्य नु त्र ॥ न त्ना नि ना मा र्थ्या नै वा प र्ग नि पा ना श्रु त त्र ना मा न्या
 र्थ्या त ज्ञा न ति शा क टा य नो नै रु त्ते स म य श्रु न स र्वा ती नि गा ग्यो वै वा क र ता
 नी वै के त द्य त्र स्वर सै स्कारो स म र्थो प्रा दे शि क न गु णे ना न्वि तौ स्या तौ सै वि ज्ञा ता नि ता नि
 य था गो र श्वः पुरु षो ऽ स्त्री त्य य चे त्स र्वा ष्पा र्थ्या त ज्ञा नि ना मा नि स्कर् यः क क्षे त त्म र्म
 कु र्या त्स र्वे त स्स त्वै त था च स्त्री र न्यः क आ धा न म श्रु वी ता श्वः स च च नी य स्या द्ध र्मि चै

२२

नै द्वा ल ली त द था पि वि स्स र्वा ष्पा र्थ्या त ज्ञा नि ना मा नि स्कर् यो वै शि र्वा वैः सं प्र यु ज्ये त ता
 व ज्ञा ना म धे य प्र ति ठं त स्या त्त्रै वं स्स्व णा र्दं श था वा स च नी च स्या त् ॥ १४ ॥ अ था पि य र्था न्या
 य वा न्का र्म ना मि कः सं स्का रो य था वा पि प्र ती ता र्थो नि र्गु स्त धै ना न्या व क्षी र पुरु षं पुरि
 श य इ स्या च स्त्री र न्ते ष्य श्वं त दं न मि ति नृ ण म था मि ति ध्य न्म मि त्या श रे मि धि चार
 यो मि प्र य ना य धि वी त्या कृः क र ना म प्र थ पि थ क्ति सा धार श्वे स था न न्वि त र्थे प्रा दि
 शि के प दे न्यः प दे त रा क्षं स च स्का र शा क टा य न ए ते का रि तं च य का रा दि चा तं क र ण
 म स्ते शु रं व स का र दि वा था पि स त्व र्थो भा व इ स्या कुर पर स्मा प्रा वा स्य र्वे स्य
 प्र दे शो ना प प द्य त इ ति त दे त नो प प द्य ते ॥ १५ ॥ य था हि वा ए त तं द्य त्र स्वर सै स्का

विक्तीरे

ने० २०

॥ ५॥

ना० ४

थो न वं सो ष ये जायस्वे नै स्वधिते मे न हि सारि स्यात् । ह हि स न्न या पि वि प्र ति पि क र्था
म वं त्ये क ए व रु ज्ञे व त स्ते न दि ती यः ॥ अ स र्खा तो स ह स्था णि ये रु ज्ञा अ धि भू म्यो ॥
अ श च्चुरि र्ज ज जि षे श ती से ना अ ज य त्सा क मि र्द इ त्ये था पि ज्ञा नै तै र्मे व थ त्थ भू य ॥ ५ ॥
सं मि थ्य मा ना या नु ब्रू ही त्ये था था हा दि तिः सर्व मि न्य दि ति द्यौ र दि ति रै त रि च्छ
मि ति न दु परि षा द्या स्या स्या सो था य वि स्प र्श र्थो न वं त्ये त्थ ग्या द रि मं जार यि
का णु के ति ॥ १५ ॥ अ र्थे वं तः श ब्द सा मा न्या दे त द्ये य ज स्व स म र्ज य इ प स म र्ज
य क र्म क्रि य मा ण म ग्य नु ब्रा मि व द ती ति व ब्रा ह्म णो क्री नं तौ पु त्रे नं न्न मि रि ति य थो
ए त न्निय त वा बो यु क्त यो नि य ता नु दृ था न वं ती ति लो कि के च ये त द्ध र्मे जा ग्री पि ता

पु ज्ञा वि ति य थो ए त त्वा स्म र्ण न रू प संप न्ना वि ची यं त ॥ इ त्यु दि ता नु वा द स्स न व
ति य थो ए त द नु प प न्ना र्था न वं ती ति त्या न्ता य न व न्ता द हिं सा त्र ती ये त य थो
ए त द्वि ज ति वि द्वा र्था न वं ती ति लो कि के च ये त द्ध र्था स प न्ना यं बा स्म र्णो न मि त्र
रा जे ति य थो ए तं ज्ञा न नै स म्प्रै य ती ति ज्ञा न न म न्नि वा द य ते जा नं ते म धु प र्क
म्या हे ति य थो ए तं द दि ति स्म र्वा मि ति लो कि के च ये त द्ध र्था स र्वा र साऽ अ नु प्रा प्राः
पा नी य मि ति य थो ए त द्द वि स्प र्श र्था न वं ती ति नै ष स्था णे र प रा धो य दे न मं
धो न प श्य ति पुरु षा प रा ध स्म न व ति य थो ज्ञा न प दी पु वि द्या तः पुरु ष नि र्वा न व ति
पा रो व री य वि स्तु नु ख नु न दि त्पु न्नो वि द्यः प्र श स्यो न व ति ॥ १६ ॥ अ था प्रो द मं

वे० २०

॥१०॥

नरेणपदविभागेनविद्यते॥ जवसायपदतेरुड॥ सञ्चितिपदवसंगवपथ्यदनम
वतेर्गत्यथेस्यासोनामकरणान्तस्मान्तावगृह्येवथायाचनितिनित्यतिरप
मृष्टविमोचनेनस्मादवगृह्णतिइतीतिर्नत्याइदमाजगानतिपेवम्यर्थजेद्या ॥३॥
वाप्यस्यार्थजेद्यावा॥ कारणेपरातिर्नत्याः॥ आचयेतिवतुथेर्धजेदेयेका ॥३॥
रान्तंमरम्भान्तिकुपेसंहितापदप्रकृति संहितापदप्रकृतीतिस्ववरणा
नाम्मावसान्यथापिप्रायेदेवनेनबहवःप्रदेशाचरन्तिः॥ इतनोपहितव्याः
स्तेवेदुदुर्निर्गुणाः॥ अत्रस्मृतिः॥ इदन्तचाशवपादेवता॥ वायुः सृ
जन्तीतिवायुर्निर्गुणश्चेद्विद्वन्मतेमेमे॥ अतिरिक्तमन्वातिवित्तम

हस्वितितथाग्निर्नस्वेमेत्रेतिवितोऽज्जलितस्त्विविरित्यप्यस्यदीप्तिनामजवस
थापिज्ञानप्रशानननत्यज्ञाननिर्द्वयं॥ १॥ स्थाणुरयम्भारकारःकिलाहदधी
त्येवदेनविज्ञानातिथोर्ध्वं॥ योर्ध्वेइत्यकलेमंडमभुतेनाकमेतिज्ञानविधूतपाप्मा
यद्गृहीतमविजातेनिगदेनैवशाश्वतं॥ अनयाविवशुद्धेधोनतत्त्वनतिकर्हिदि
त्वं॥ स्थाणुस्तिष्ठतरथोर्त्तरणस्त्वावा॥ २॥ उतत्त्वःपश्यन्नददर्शवाचमुतत्त्वः
यवन्तश्चलोत्तेना॥ उतत्त्वस्मेतन्वं॥ विसमिजायेवपत्यउशतीसवासाः॥ का
येकःपश्यन्नपश्यतिदावतपिचश्चयवन्तश्चलोत्तेनामित्यदिदांसामार्यम
येकस्मेतन्वंवितस्वइतिस्वयमात्मानंविदुणतेजानेप्रकाशनमर्थस्याहानयावाचोपमा

नै०८
॥११॥

नमयावावाजायेवपत्येकामयमानासुवासाःअतुकालेपुसुवासाःकल्याणवासाः
 कामयमानाःअतुकालेपुयभासएनीपयतिमश्ननातीत्यर्थेप्रवांसीतस्यात्तरा
 हपसनिर्वचनाया॥११॥उतत्वेसरयस्तिरपीतमाहुर्नैनहिंवस्यपिकातिनपु॥अ
 येन्वावरतिमाययेषवाचैशुश्रूषीप्रफलामपुथ्या॥अयेकैवाक्सस्मिस्तिरपीत
 माहुरममाणीविपताभेदवसरथेरमणीयेस्तानइतिवाविजातार्थेयन्तामव
 तिवाजायपुबलवत्स्येन्वाह्यवरतिमाययावाःअप्रतिरूपयानास्मेकामाहुग्ध
 वाग्द्वयोदयमनुयस्यानेपुयावाचैश्रुतवाभवत्यफलामपुथ्यामित्यफलास्माअ ॥१२॥
 पुथावाग्नवतीतिवाकिंचित्युथफलतिवार्थेवाचैःपुथफलमाहयाज्ञेदवतपुथफ

लदेवताध्यानेकोसासाकृतधर्माणअपकेवरावसिबरेन्योसासाकृतधर्मभ्य
 उपदेतो नमंजोत्संप्रादुस्तुपदेशा यग्ताभेतायवैविधेयमहणयमयेधंसमाना
 मिष्टवदंशवेदोगानिचविन्ममिन्मनासुनमितिचैतवैतःसमानकर्मणोयानु
 वायातुर्दधातेरतावैयस्यसत्स्यनमधयत्येतावतोमवातामिदमभिधानं
 नचैदुकमिदैदेवतानामवाधानेनदमितिदूषद्व्यदेवतमंत्रेनिपततिनैधौ
 दुर्कैतत्॥अभ्येन्वावावरवैतीअश्चनत्वावालवैतेयातादेशवारणाभाभ
 वैतिदेशोदशतेः॥मृगो न नीमः कुचरो गिरिष्ठाः॥मृगइव नीमः कुचरो
 गिरिष्ठा मृगामादृगंति कर्मणो नीमो विम्यस्यस्मादीमोप्येतस्मादेवकु
 चरइतिवरतिकर्मकुत्सितमंधचैदेवताभिधानेकार्थेनवरतीतिगिरि

नै० २०

॥१२॥

व०

छागिरिस्त्रायगिरिपर्वतः समुद्राणोभवतिपर्ववायव्यतः पर्वपुनः २०
 तः प्रीणते वायव्यसासपर्वदेवानस्मिन्निर्गतातिनत्प्रकृतातरस्त्रिधिसामान्या
 न्मयस्त्रायमिध्यापिगिरितस्मादेवतस्यानिनामानि प्राधान्यस्तृतीनां देव
 तानां तदेवतमित्याचक्षतेतदुपरिष्ठाद्यास्यामोनैचंद्रुकानिनेगमाने
 देहः ॥२०॥ ॥ इतिनेरुकेप्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ समाप्तयस्तत्रव
 तुष्टमैतान्येतिपातावायुवातानननननननसातः सैवांतोसर्वतोनिस्त
 ज्ञासोहविर्भिरितीमान्यथापिवायव्योऽपिदमयवैतोऽपिदं स्था
 णुरयमुत्तः श्यन्तुतत्संख्यदिगतिः ॥ ॥ अथनिर्वाचनंतधेयुप
 देष्टुंस्वरसंस्कारोसमधोप्रादेशिकेनविकारेणान्वितोऽस्यातीतभातानिनिर्वा

॥१३॥

यादंधानचिने१

अ३

धोप्रादेशिकेविकारेधेत्यः पराक्षतकेनजिहृतिस्सामान्यनादिद्यमानसामान्यथ
 रवर्गसामान्यानिर्जुयान्तलेवननिर्जुयान्तसंस्कारमायितेविषयवत्तादिरुजपोत
 वंतियथार्थविमर्शीः सन्तमयत्यत्रमवलमितिआत्वादिएवशिष्येतेथाथस्तेनिर्वृत्तिस्था
 नश्चादिजोपोभवतिसंतीत्यथार्थतलोपोवातिगत्वागतमित्यथाकपथाजोपोभवति
 जगत्तुर्नेगुरित्यथाकपथाविकारोभवतिराजादंडीत्यथापिवर्णलोपोभवति
 मीत्यथापिदिवर्णलोपस्तत्रइत्यथायादिविपर्ययोभवतिन्यातिर्धनोविदुर्वाद्ये
 त्यथायादिविपर्ययोभवतिस्तोकारज्जः सिकतास्तर्कित्यथार्थतयापत्तिर्भवति
 आचोमेघानाधोगाधोवधूर्मेधित्यथापिवर्णोपजनआस्थसाराभरुज्जेनितधत्रस्व

119911

परुषेगवि। पर्ववतिभास्वतीत्यौपमन्यवोधाप्यस्येकोरडिमश्चरमसैप्रतिदीयते
तदेतेनोपेक्षितयमादित्यतोस्यदीक्षितेवतीतिसुषुम्नःस्तर्यरडिमश्चरमागेध
वडस्यपिनिगमोमतिसोपिगोरुच्यते। अत्राहगोरमन्वतेतितदुपरिष्ठाद्याख्या
स्यामः सर्वेपिरमयोगावऽउच्यते॥॥ तावोवास्तन्युडमिमिममयैयत्रगा
वोभूरिशं गाः अयासः। अत्राहतदुरुगायस्यवृत्तः परमैपदमवभातिभूरि॥
तावोवास्तनिकामयामहेगमनाययत्रगावोभूरिशं गाः अयासः। अत्राहतदुरुगायस्यवृत्तः परमैपदमवभातिभूरि॥
उक्तोनामधेयैप्रभवतीतिसततद्वर्गंश्रयतेवाश्रयतेवाश्रयतेवाश्रयतेवाश्रयतेवाश्रयते॥॥
अतमितियाशिरसोनिर्गतिमितियायासोयनास्तत्रतदुरुगायस्यवृत्तः परमैपदमवभातिभूरि॥

जतेः परमं पदं परार्थं स्वभावमवतिष्ठति पादः पद्येते स्ते निश्चानात्यदं पद्यपादप्रकृ
तिः प्रभागपादः प्रभागपादसामान्यादितराणि पदाः न्यवमन्येषामपि सत्त्वानी
सदेहाविद्यते तानि च स्वमानकर्माणि समाननिर्वचना निनानाकर्माणि चेत्त्रा
नानिर्वचनानियथार्थनिर्वक्तव्यानीतीमान्येकविंशतिः पृथिवीनामधेयान्य
नुक्ता तानितत्र निश्चिन्ति निर्मणद्वयतेः कक्षापत्तिरितरासा पृथिव्या सौंदर्य
तेतयोर्विभागस्तस्याः एषा भवति ॥ ७ ॥ यः ईवकारनसोः यस्य वेदयईद
दर्शं हि रुग्निन्दुतस्मात् समातुर्यो नापरिवीतो अंतर्बद्रूपज्ञानिर्लेतिमावि
वेशा वद्रुप्रज्ञाः रुक्मापद्यत इति परिव्राजका वर्षकर्मतिनैरुक्ता यईवका

ने० प्र०
॥१॥

येति कुरोति किरती सदिज्जो वर्षकर्मणानसोस्यवेदमध्यमः सः एवास्यवेदम
ध्यमो ददतादि स्यापहितं समाहृत्यो नो मातातरि ह्येनिर्मयेतेऽस्मिन्भूतानियोनि
रंतरि ह्येनानवयवः परिबीतो वायुनायमपीतरो यो निरेतस्मादेव पर्युतोभव
ति वै द्रुप्रजोभूमिमापद्यते वर्षकर्मणश्चाकष्टास्यैकन्यथोयकैसर्वादेवता
ज्ञानासीतितस्मदेवतोभयदिगायादुर्वैभवाग्नज्जनेतौ पप्रच्छविविदिषाणित्व
नित्यास्माः एतामवमादिदेशात्तामदेवतेति ॥ १॥ अयं सतिं क्रेयेन गोरभीक
तामिमातिमा दुं ध्वसनावधिश्रिताः साविति निर्निहिवकारमर्थ्यविद्युप्रवे ॥ १॥
ती प्रतिवतिमाहता ॥ अयं सशथायतयनगारभिप्रवत्तामिमातिमा पुंशर्देक

रातिमायुमिवाभिवादित्यमिते वावगेषामध्यमिकाथं सनेमेचयि श्रितासा
वित्तिभिः कर्मभिर्नोवेर्निकरोतिमर्थ्यविच्छेदवती पृथ्क्कृतवर्षे च विरितिरूपनाम
दृष्टातीति सतो वर्षेण प्रजापद्येयैतन्युनरादन्त ॥ १॥ हिरण्यनामान्युत्तराणि
पंचदशहिरण्यं कस्माद्वियतः आयस्यमानमिति वाद्वियते जनाज्जनमिति वा
हितरमणोभवतीति वाहृदयरमणोभवतीति वाहृयते नोस्थास्त्रेष्माकर्मणोत
रिद्धनामान्युत्तराणि षोडशोतरि ह्येकस्मादंतराज्ञांतंभवत्यंतरे मेइति वाशरी
रध्वंतरि ह्येकस्मात्समुद्रस्येत्यर्थेन समुद्रेणम
दिश्यते समुद्रः कस्मात्समुद्रवंत्यस्मादापः समभिर्जवंत्येनमापः संमोदंतेस्मि

ने० १००

मुताविममुद को प्रवृत्तिपुनः प्रतीतिवा तपोविमो गमनेतिहा समा च दत्तदेवापि श्वा वै
 धिषेणः शं तमुच्चैः कार्या भवान रोच न्च वदुः सशतनुः कनीयानतिषेयार्थवक्त्रे
 वापि सत्रः प्रतिवेद ततः शीतनो राशौ द्वादशवर्षाणि देवानववर्षत मृद्वर्षाणि ॥
 ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥
 वापि शिशि च राशौ न तमुवाच देवापि पुनो हितस्तस्मानि यान्नयानि च नेति तस्य
 तद्वर्षकामनु तै तस्य ज्ञानवति ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥
 सति विविक्ता ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥
 जगः अपि च एतत्तद्विहितं सज्जति वा सो नो रोच रासमानमिति वा पुनः

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥

पुरुषा ये तनि परणा का पुंनर केत तस्मा यत इति वा होत्र मषिर्निषीदं नृषिर्देवा
 नास्तोमो ददर्श स्या पमन्यवस्तद्ये नोस्तपस्यमाना न्नास्त्ययं भवमानपेत
 तः श्रपयो भवं स्तदृषीणा मषिर्निषीदं नृषिर्देवाना मास्त्या वप्र
 यानेन वंदवसुमतिर्देवानां कन्याणीमतिर्विकित्वा श्वतनावा न्नास उत्तरस्मा
 दधरं समुद्रं उत्तर उत्तरतरोः सवस्यथरो योरो धोनथावती सूर्यगतिः प्रतिषि
 क्षतस्योत्तराभ्यसेनिर्वचनाय ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥
 तः कपयन् दीयेता देवश्चरते वृष्टि वनिर रा एता हस्पतिर्वा वमस्माः अयच्छ
 ता शीतनुः शीतनोस्त्विति वा शमस्मेतन्वाः अस्त्विति वा पुरोहितः पुरः एनंदय

ने० ४
॥१३॥

निहोत्रायवृतः कपायमाणेन्वध्यायदेवश्रुते देवा एनं श्रुत्वन्ति वष्टिवनिं
ष्टिवायिनं ररणे ततिरभ्यस्तो बहस्यति ब्रह्मासीत्यास्मेवावमयश्च
हृदपाव्याख्यातै ॥ साधारणान्युत्तराणि वष्टिव आदित्यस्य च या निव
स्य आवा न्यत्रो परिष्ठाता न तास्यास्याम आदित्यः कस्यादा दत्ते रसाना
दत्ते भासं ज्योतिषा मा दीप्ता भासति वा कितः पुन इति वा न्यप्रयोगे त्वस्येत द
र्वाभ्यामायेस्तुक्तमाकर्ष्य आदिते यमदितः पुनमेवमा न्यासा मधि देवता
नामादित्यप्रवादास्तुतयो भवन्ति तद्यथैतन्मित्रस्य वरुणस्यापि मृगादन्त
स्य भगव्यांश्चस्ये सथापि मित्रावरुणयोः आदित्या दानुनस्पती तानपती ॥१३॥

अथापि मित्रस्य कस्य प्रसमित्रमर्ताः अस्तु प्रयत्नान्यस्तः आदिसंशितं प्रति प्रतेन
त्यपि निगमा भवत्यथापि वरुणस्य कस्य अथावयमादित्यं जतेत वा जतमिति
कर्मनामवृणोतीति सतददमपीतर इतमेतस्मादेव निरुत्तिकर्मवारयतीति स
तो नमपितमुच्यते यदा वृणोति शरीरं ॥ स्वरादित्यो भवति सुअरणः सुईरयः
स्वतोरसास्तुतो भासं ज्योतिषां स्तुतो भासति वेतेन द्योर्वाख्याता एश्चिरादस्य
भवति प्राशक्त एनं वर्णाभिंतिनेरुक्ताः सस्य शारसान्सं स्पष्टा भासं ज्योतिषां स
स्पष्टो भासति वाथ द्योः संस्पष्टा ज्योतिर्भिः पुण्यं द्विश्च नाक आदित्यो भवति
नेतारसानेनेता भासं ज्योतिषां प्रणयो ययोः कमिति सुखनाम तत्प्रतिपि सं प्रतिपि

नै० २

॥२०॥

नेरुक्तास्वाष्टसुर इत्येतिहासिका अणोच्योतिषश्चमिश्रीभावकर्मणोवर्षक
कर्मजायतेतत्रोपमार्थेनयुक्त्वणोभवंसद्विवक्षुमंत्रवर्णः ॥ १९ ॥ आश्रय
वादाश्चावेष्ट्याशरीरस्यस्रोतांसिनिवारणोवकारतस्मिन्कृतेप्रशंस्यदिरआ स ३
यस्तदभियादन्येषर्जवति॥१९॥ दासपत्नीरहिजोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आ
पःपणिनेवगावः॥ अणोबिलमपिहितंयदासीदुन्नंजचन्याः अपतद्वार
दासपत्नीर्दासाधिपत्योदासोदस्यतेरुपदासयतिर्माप्यरहिजोपाः अतिष्ठ क ३
नहिनायुजाः अहिरयनादेत्यंतरिक्षेयमपीतरोहिरेतस्मादेवतिर्हसिताप ॥२०॥
सर्जोऽप्राहतीतिनिरुद्धाः आपःपणिनेवगावः॥ पणिर्वणिग्वतिपणिःपण

नादणिव्यप्येनेनेत्यणोबिलमपिहितंयदासीत्॥ बिलेभरंमयतिविमर्तेर्वज्रंजधि
वानपववारतदुन्नोवृणातेयोवर्जतेवोयर्दतेवोयदवृणातदुन्नस्यवृन्नन्वमितिपि
जायतेयदवर्जतेतदुन्नस्यवृन्नन्वमितिपिजायतेयदवर्जतेतदुन्नस्यवृन्नन्वमिति
विज्ञाते॥१९॥ रात्रिनामान्युन्नराणित्रयोविंशतीरात्रिःकस्मान्नरमयतिभृता
मिनर्त्तंशरीरपुंरमयतीतराणिश्रुवीकरोतिरातेवोस्थादानकर्मणःप्रदीयते
स्यामवश्यायाऽउपोनामान्युन्नराणिषालशोषाःकस्मादुच्छतीतिसत्यारात्रेरप
रुकाकस्मस्याःएषाभवति॥१९॥ इदंश्रेष्ठंज्योतिषांज्योतिरागाश्चित्रःप्रकेतोऽ
जनिष्टविम्बा॥ यथाप्रस्तासविक्तुःसवार्योऽवारायुषेसोनिमोरक॥१९॥ श्रेष्ठं

५४ रुद्रादितिवर्त्तना प्रोचते त्वत्कर्मणः स्वर्गमस्यावत्स ५५।

नै०५०

॥२३॥

ज्योतिषीत्यातिरागमादित्रयप्रकेतनैप्रजाततममजनिष्विभूतनमयथा प्रसूतास
 विनुः प्रसवापरजिरादित्यस्य वैराग्यस्य योनिमरीचस्थानं स्त्रीयोनिरतियुतः ए
 नो गजसंस्थाः एषा पराप्रवृत्तिः ॥ २३ ॥ रुद्रादित्यारुद्राती श्वेत्यागादरे गुरुभास
 दना न्यस्याः समाने वै धृतः अन्तर्वाद्यावावर्त्तचरतः आमिनाने ॥ रुद्रादित्या
 स्मर्त्तवत्समाहसाहचर्यार्जसहरणाकारुशती श्वेत्यागादित्या श्वेततरि वत्कृत्वा
 लदना न्यस्याः कृष्णवर्त्ताराजिः कृष्णकृष्णतेर्न कृष्णवर्त्तार्थेन संस्तुतिसमानवै
 धृतसमानवै धृतः अमृतममरणाधर्माणावन्तर्वाद्यादिति तरेतरमभि ॥ २३ ॥
 प्रसूतावावर्त्तचरतस्तः एव वा वीद्योतनादपि वाद्यावावर्त्तचरतस्तया सह चरतः

इति स्यात्कामिनानेऽभिमिनानेऽभ्यो न्यस्या आत्मकुर्वाणोऽग्रहर्त्तमान्युत्तराणि
 कादशाहः कस्मादुवाहरे न्यस्मिन्कर्मणि तस्य धनिपातो भवति वैश्वानरी या याम
 जि ॥ २३ ॥ अहश्च कृष्णमहर्जुनं विवर्त्तते रजसी वेद्यानिः वैश्वानराजा यमानो
 नराजा याति रज्जोतिषां तिस्रोसि ॥ अहश्च कृष्णरात्रिः शुक्लवाहर्जुनं विव
 र्त्तते रजसी वेद्यानि वैदित्यानिः प्रवृत्तिर्निवैश्वानरो जायमानः इवोद्यन्तादित्यः
 सर्वेषां ज्योतिषां राजा वाहन्तित्योतिषा तमोसि मेघनामान्युत्तराणि त्रिंशमे
 घः कस्मान्मेहतीतिसतः आऽउपरऽउपळः इत्येताभ्यां साधारणानि पर्वतनाम
 निरुपरऽउपळो मेघो भवत्युपरमेतेस्मिन् भ्राण्युपरताऽआपः इति वातास्मान्

नैः ०५

॥२२॥

वामवति ॥ २२ ॥ देवानां माने प्रथमाः अतिष्ठन्तत्रा देवानुपराः उदायनः त्रयस्त
पति एधिबीमन्तपा हावृकं वरुतः पुरीषः ॥ देवानां विमाने प्रथमाः अतिष्ठन्मा
ध्यमका देवगणाः प्रथमः इति मुख्यनाम प्रतमो भवति कृतत्रमंतरि चैविक
त्तं न मेघानां विकर्तने न मघाना मुदकं नायेते त्रयस्तपति एधिबीमन्तपाः
पुनर्न्याकापुरादित्यः शीतो लघुपैरोषधीः पावयं त्यन्तपाः अनुपपत्ति लोका
न्नेनस्वेन कर्मणा यमपीतरोन्तपः एतस्या देवान् रूपतः उदके नापिवावा
विति स्याद्यथा गणितितस्यान्तपः उतिस्याद्यथा प्राचीनमिति ॥ हावृकं वरु ॥ २२ ॥
तः पुरीषः ॥ नौदं दित्याः उदके वृकं नित्युदकनाम ब्रवीते नौदं द्यकर्मणा न
नैवा

शतेन पुरीषं एणतेः सुरयते नौ ॥ २२ ॥ वाङ्मा न्युत्तराणि सप्तपेया राहा
कस्या दवेस्तत्र सरस्वती त्यतस्य नदीवदेवता यच्च निगमा भवति तद्यदेवता
वदुपरिष्टात्तद्याख्यास्यामो येतन्नदीवत् ॥ २३ ॥ इयं शुष्मेभिर्विसरयाः इवारु
जत्सानुगिराणं तविषेभिर्रुर्मिभिः पारावतघ्नीमवसेसुवृत्तिभिः सरस्वती
माविवासेमधीतिभिः ॥ इयं शुष्मेः शोषणेः शुष्ममिति वननाम शोधयती
तिसतो विसंविस्पतेर्मेदनकर्मणो वृद्धि कर्मणो वासानुसमुद्धिर्नभवति
समुत्तुन्नमिति वामरुद्धि रूर्मिभिः पारावघ्नी पारावारघातिनी पारंपरं

ने ५०

॥२३॥

वस्यारमवरमवनायसुप्रबेत्तामिस्तुतिभिः शोभनाभिः सरस्वती नदी कर्मभिः
परिवर्त्तमोदकनामान्युत्तराण्येकशतमुदककस्मान्तीति सती नदी नामा
न्युत्तराण्यसप्तत्रिंशन्तद्यः कस्मान्तदनाः इमानवन्ति शब्दव्योबहुकमा
सान्धेयदुर्कवर्त्तमान्येतिव प्रधान्येति तत्रेति ह्यसमाचक्षते वि श्रामिव अपिः गुण
मपेजवनस्य पुरोहितो बन्धुविवि श्रामित्रः सर्व मित्रः सर्व स्य तं सुदासाः क
लाणदा कः पुनस्पर्धनीयज्ञाना मिश्रीभावगतिर्विस्तृतैर्गदीनादिपादु
जाः सन्ति दनयाया वनुपयुक्तिरेवाधि श्रामित्रो नदी स्मृता वगा धातवतन्यापि
वदपि वद वनुपयुक्तिरेवाधि श्रामित्रो नदी स्मृता वगा धातवतन्यापि
उपेजवनः पिजवनः पुत्रः पिजवनः ३

॥२३॥

च से सोम्यायः अतावरी रूपमुक्तं मे वैः प्रसिधुमकावहती मनीषावम्यरक
कुशिकस्य सनुः ॥ ३ ॥ परमधर्मवचसे सोम्याय सोमसंपादिनः अतावरी अत
वत्यः अतमित्युदकनाम प्रत्यतं भवति मुक्तं मे वै रवने रवने र्वा मुक्तं मे मुक्तं
अतुर्त्तु रत्ने र्गतिकर्मणा मुक्तं मे इव कानोयावद्वे प्रीत्येव सती ह्यममी
क्षणमेवति ह्यः स एतेः प्रत्युतः कालः कालः कालयते र्गतिकर्मणः प्राप्तिरु
यामिसि भुं व ह्यमहस्यामनीषया मनसः इषया स्तसा प्रज्ञया वावनाय
कुशिकस्य सनुः कुशिको राजा बन्धुवक्रोशतेः शब्दकर्मणः कशते र्वा स्यात्पका
शयतिकर्मणः साधुविकोशमर्थाना मिति वानधः प्रत्यवः ॥ २५ ॥ इति शोः अस्याः

नै.प्र.

URMA

अतः कृत्वा कुर्यात् हन्त्यत्र परिधिं नदीनां देवो न यत्सविता सृष्टाणि सस्यवयं प्र
मवेयामः उवीगर्भं ज्ञेयमानं रदं कृत्वा कुर्यात् इतिः खनतिकर्माणां हन्त्यत्र परिधिं न
दीनामिति व्याख्याते देवो न यत्सविता सृष्टाणिः कन्यायाः पाणिः पाणिः पणायतेः
पुत्राः कर्मणः प्रगच्छन्ती देवान् पूजयेति तस्य वयं प्रसवेयाम उवीगर्भः उ
लोतेर्बलोतेरित्यौर्णवामः प्रत्याख्यायते तः आशु श्रुदुः॥॥॥॥ आतेकारोश्च
णवामावर्त्तयथाथ दूरं दनसारथेन नितेनैस्येपीयानेव योषामयायेव
कन्याश्चैते। आशु णवामते कारो वचना नियाहि दूरं दनसारथेन च नि ॥३५॥
नमामते पाययमाने वयोपापुत्रं सयं येव कन्या परिष्वजनादनिनमा इति वा

परिविधि

[illegible]

नैऋत्ये

॥२५॥

रितेतिरितं तावनकुटिलातिकुटैतावितं नौतविज्ञाचरसथातविज्ञाचरदितिद्विधिरुविग
 मनेवासुहातुः सुप्रसृतोदोतादियस्यगतातव्यतिथिर्दुगेणसमर्पेदुराणमर्पेस
 चरस्याधिकपेयतिरश्मिर्विकर्षयेतिवद्विर्विकर्षयेतिवन्ननेतजस्यभोगोत्राः अदिगोत्रा
 धरिर्त्रिगोत्राः सर्वगोत्राः अतजावकुशं द्यावर्षतिनिगमोनिगमयतिरुपेतिर्वच
 नाय॥२५॥ उतस्त्वयातीक्ष्णोतिप्रदीपुस्त्वयातिस्वीयाधीयतेअधिकतजामतिः॥ कतुदधि ॥२५॥
 काधदमेतवीनसयामेकौस्यन्वापनीकणवृ॥ अधिसवाजीवित्तनवास्तोपणमदु
 एतस्मृतेध्वानेर्वाजागीयतेयीवाकिरतेर्वागणानेर्वागकृतेर्वाधिकदोत्रामति
 कास्त्रानेकतुंदधिकाः कर्मेवायसीया॥ अतुसंतवीनवृ॥ तनोतेः एपेयायकयानि

धियंपायः पातापयानोपायत्वमनोयाडेः वपततीतिनापापयेतेर्वाभ्यान्नरुथतिरये
 वेकमा॥ इद्रेणयुजातरुपमवृत्रमित्यपिनिगमोभवतिमेदनामदतेस्तुतिकर्महाः॥ पु
 रुप्रियामेदतेर्वामभिः कविरित्यपिनिगमोभवति॥ समेदनाउदियतिप्रजावतीरिति
 व॥ अन्यनमदाहनायाहिरुयेया॥ अन्यनमदाहनायाहिरुयेया॥ अन्यनमदाहनायाहिरुयेया॥
 सम्यमपणादाहनाएवमवयेतस्मादाहनस्यादधिर्नदोभवतिनदतस्तुतिकर्महाः॥
 नदस्यमारुधतः कामआगनानदतस्यमारुधतः कामआमसैरुधप्रजनस्यत्रस्य
 वारिणइत्यपिपुत्रियाविलपितेददयते॥२॥ नयस्यचाघादधियीनधन्वनोतरिहो
 नाइयः सोमोअज्ञाः॥ अश्रोतेरित्येकः॥ अन्यपेगोमानाभिरक्षाः॥ सोमोदुग्धभिरक्षाः॥
 लापात्राः सिंहप्रत्यवमत्साः॥ धियतिनिगमः॥ सर्वः॥ चरतिनिगमउत्तरइत्येकनय

नैः ८०
॥४६॥

गोमान्गोभिर्बहलियस्यर्थसोमोदुग्याम्यः सरति सर्वे नियेति निगमा इति शाक पणिः
 आत्रमिति लिप्रनामा इह अतनेन वतिः स पतनीत्वरं स्था जग घञ्छूत्रमगिररुक्ता
 ज्ञतवेदाः स पतत्रिवेत्वरं स्थावरं न गमं वषत्तन्नि प्रमथिरकरो ज्ञातवेदा उतिर
 मनात् आत्मा रथं यथोतयइत्यपि निगमो भवति। हासमाने इत्युपरिष्ठाकारस्या
 मोवमकः पडिरुपसर्गदिउ। पांनेरिति वास्यानेरेति वास्यनेरिति वाससंन
 पक्तमविदं स्तुते तं स्वपनमेतन्माध्यमके ज्योतिरनियदर्शनेतदिव्याविदं ज्ञाज्य
 चमानेदिता वसेत्ता स्वयया नशेनः दधे सनामथमेन स्थानउत्तमे नशेनः मुखम्
 मनेन आमुगयेतो मगमिव ज्ञास्या ज्ञेयाः ॥३॥ यरा होमे घोमवति बरा हारविध्यदरा
 तिते अदिमस्ते अपि निगमो भवत्ययमपीतरो बरा हएतस्यादेव बरमा हापीरिति वज्रो

॥४६॥

त्यणेरुहतिस्तानि वरं स्तले रुहतीति वा। वरा इति इह पृथुपमित्यपि निगमो भवत्यगिरमोपि
 वरा हाउत्येते। वराणस्यतिर्यपभिर्वराहेः। अथायते माध्यमकादेव गणवरा इव उच्यते।
 पश्यन्तिरेण्यवक्रानयो दंष्ट्रान्विधावतो वरा इत्यास्वसराण्यहा निभवेति स्वयं सारीण्यपि
 वास्त्यादित्यो भवति स एतानि सारयति। उस्ता इव स्वसराणीत्यपि निगमो भवति। अथ अ
 गुल्यो भवेति शर्या इषवः शरमयः शरः शृणोतेः। शर्याभिर्नरमाणा गमस्यारित्यपि
 निगमो भवेत्तवस्यको बो भवति यदेनमवस्यको मत्रो भवति यदेनानवस्यको मत्रो भवत्य
 र्वतिभूतान्यको वृत्तो भवति स वतः क दुकिं स्ता ॥४॥ गायति च गायत्रिणे र्वस्यर्कम
 किं णः ब्रह्माणस्वाशतक्रतु उर्ध्वं शमिवयेमिरे। गायति च गायत्रिणः प्रावति तेर्कम
 किं णः ब्रह्माणस्वाशतक्रतु उर्ध्वं शमिवयेमिरे। गायति च गायत्रिणः प्रावति तेर्कम

ने०८०

॥१०॥

तिरापनीरथनेमिर्भवति यक्षिपुनातिभूमिः। उतपयारयानामादिभिर्देवो लसा॥
 तेमरुतः सूरपविनाशसुरिण्यपिनिगमोभवतो वसो व्याख्यातं भन्योतिने चन्ये-सु
 स्मादापःतिरो यन्वातिरो वतः योपनिगमोभवति सिनमलोभवति सिनामिन्नातिः।
 येनस्माधिते मभिमरितः यज्ञस्वापिनिगमोभवतीत्यामुष्येतेन व्याख्याने मनासु हेत्यर्थः॥
 वसुभिः सनामुवाच वसुभिः सह जो दिदि तिनिपातो नुदा नः पुरस्तादेव व्याख्यातो भाषिपु
 ना मेरुमवत्पुदा मधिदमिमना सिवितो त्वमिनागा अतय स रतिथाः व्याख्याता
 रउय सर्गः पुरस्तादेव व्याख्यातो भाष्यार्थे दत्तते। अन्त्यो अयः अन्त्यो अयः अ
 पोले श्रीति युते योतते पत्रो वा ते वा। अस्मै पुस्तमभिरत्ने व येति॥५॥ पवित्रपुनाते ॥५॥
 मंत्रः पवित्रमुच्यते। येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते स देव्यपिनिगमोभवति रश्मयः

पवित्रमुच्यते। गमस्ति एते न्मिररिभिः सुतः योपिनिगमोभवत्ययः पवित्रमुच्यते।
 शतपयिजाः स्वधाममदंती ब्रह्माः॥ अग्निः पवित्रमुच्यते वायुः पवित्रमुच्यते सोमः
 पवित्रमुच्यते सूर्यः पवित्रमुच्यते इन्द्रः पवित्रमुच्यते। अग्निः पवित्रं समा पुनातु। वा दू
 सोमः सूर्य इन्द्रः पवित्रं ते मा पुनंस्त्रियपिनिगमोभवतितो दस्तु धनेः॥६॥ पुरुषोदा
 व्यान्यो देरिरग्नेतमोसुदा। तो दस्येवशरणामरुस्य। धदुदा स्वात्तामेवा मिद्वयाम
 रिरमित्रञ्छते शश्वगप्यरिरेतस्मादेव यदन्यदेवत्या अग्न्यावा दूतयो दूयत इत्ये
 तद्द्वयमवक्ष्यता। तो दस्येवशरणामरुस्य। तु दस्येवशरणो धिमरुतः स्वजाः
 सुअवनः अलुक्कोना यत पृष्ठः स्ववा इत्यपिनिगमोभवति शिपिबिहो दिष्टुति
 ति विष्टो देवानीभवतः कुस्तिताथीये पूर्वमवतीत्योपमन्यद॥७॥ किमिहो वि

बिदे ०

॥५३॥

रुधसः॥ अवाक्यं च साधारित्ति॥ १२॥ उर्वर्यपरा उर्वर्यश्रुतं रुधसमश्रुतं उर्वर्यवशा
 स्यान्नसराश्रितारिष्यपिवासादेतिरूपनामासातेरसानायेनन्यादर्शनीयव्याप
 नीयेवास्यष्टदंशनायेतिवाक्येतिर्यदस्यदस्यमलस्याप्योनामेतिव्यापिनस्तजा
 भवतिरूपवतीतदनानिमित्तिवातदस्यदस्यमितिवातस्यादर्शनान्मित्रावरुणयो
 रतश्चक्रदतदभिवादिष्यमर्गमिति॥ १३॥ उतासिमेजानरुणेवासिषोर्नग्याजस
 न्यनमोयितातः॥ १४॥ स्फुल्लं जलपादेयेनविश्वेदेवापुष्करेत्वाददेता॥ अथसिमे
 नातरुणावासिषोर्नग्याजसमनसापितातोऽप्यश्रुतं जलपादेयेनजस्यः सन
 नातरुणादेभतिसर्वेनदवापुष्करेत्वाधारयंतपुष्करमंतरिहोषतिरुलान्पुदकं
 पुष्करं पुजाकरं सनपिनयंवेदसपीतरस्युष्करमनस्यादवपुष्करेनपुष्करेवापुष्पे

114310

पुण्यतर्कनेवतस्तीतिर्नयतां ॥५॥ यजन्माययुनेततन्वहर्मेणनकुनवञ्चका
यामतमाप्रज्ञानततन्वहर्मेणप्रज्ञानवञ्चकारवाजपत्यंवाजपतने। सनेनवा
जपत्यमित्यपिनिगमोभवति। यानगध्यंगध्यस्तुजरपदं। अथ्यामनाज्ञगेध्यमित्य
पिनिगमोभवतिगध्यंगक्तैः। अज्ञानालक्षणध्वसुखमित्यपिनिगमोभवतिगध्य
निर्गमोभवतिगध्यंगक्तैः। अज्ञानालक्षणध्वसुखमित्यपिनिगमोभवति। कोरयाणः कृतयानः। पा
कस्थाभाकोरयाणज्यपिनिगमोभवति। कोरयाणस्तुयानः। सतोरयाणदुषका
हियजेमरुद्धिरिदमखिमिः सत्तावाज्यपिनिगमोभवत्यद्रयाणद्वीधेत्यानः। अ
नुष्टुयाकृष्टुष्टुमाणेयपिनिगमोभवति। हरयाणेहरमाणयानः। रजतहरयाण
इत्यपिनिगमोभवति। यथागतः कर्मणि कर्मणि स्थिरः। प्रत्यतस्तोमात्रैदीर्घदेतोर्

चै०२०

॥१४॥

दूमावर्चण॥१५॥नियदुष्टाक्षिश्चमनस्यमूर्धनिशुद्धस्यविद्वेदिजोरुवदना॥
 निवृणक्षियक्तुमनस्यमूर्धनिशयकारिणः॥३॥सुखादियस्यत्रोपयित्तरूप
 माणोवनेतिवावयेनेतिवा॥अत्रदेतवीकितेस्यपिनिगमोभवतिवीलयतिश्चत्री
 नयतिश्चस्यैस्तमकर्त्ताणोपवेणसंप्रयुज्येतेनिःपपीस्त्रीकामोभवतिविनिर्ग
 तपसःपसःसपतिःस्यजातिर्मेकर्मणोमानोमद्यबनियपीपरादाःसयमाध
 नानिनिभजतिमानस्त्वतथापराशस्त्रणाशमुदकेभवतितर्लमश्रुतेः॥३॥तर्लना
 न्पिरेरभीत्यपिनिगमोभवतिचुंपमदिछत्रकेभवतियत्तुभ्यते॥१५॥कदम
 भेमगधसेपदाचुंपमिवस्फुरत्कदानःशुश्रुवदिरदेशाश्रीगाकदमर्तम
 नाराधर्पतंप्रादनचुंपमिवावस्फुरिष्यतिकदानःशोथतिगिरदेशाश्रीगोजे

॥१५॥

तिक्षिप्तनामान्वितमेवोक्तिर्भवतिनिचुंपुणःसोमोनिवीतएणेनिवमनेन
 ग्रीणाति॥१०॥पत्नीर्वतःसुताइमेक्षिःसोमाःकामयमानायेतिवीतयेपानाया
 जग्मिर्निचुंपुणः॥पत्नीर्वतःसुताइमेक्षिःसोमाःकामयमानायेतिवीतयेपानाया
 पोलाग्मिर्निचुंपुणःसमुज्जपिनिचुंपुणउच्यतेनिवमनेनएयतेवभथोपिनिचुंपुण
 उच्यतेनीचरास्मिकणोतिनीवेधयतीतिवा॥अवेभथनिचुंपुणस्यपिनिगमोभव
 तिनिचुंपुणनिचुंकुणातिवपदिर्नतुर्भवतियस्यद्यते॥१४॥सुगुरसत्सुहिरण्यः
 स्वश्वोवृद्धस्मैवयइजोदयाति॥यस्वायेतंवमुनाप्रातरित्वामुक्षीजयेवपदिमु
 स्मिनाति॥सुगुर्भवतिरुदिरण्यःस्वश्वोमरुद्धोस्मैवयइजोदयातियस्वायेतमन्त्र
 नप्रातरागमिन्नतिथेमुक्षीजयेवपदिमुरस्मिनाति॥कुमारेमुक्षीजामोवनाचैत

नै० २०

॥५५॥

ननाञ्चमननाञ्चपादुःपधतेः। आविःस्वःकृणुणतेमृहतेवसे सपादुरस्यानिर्नि
 जोनमुच्यते। आविःकुरुतेभासमादि-योहृतेवसेवसेमिमुदकनामत्रवीतेवा
 जादकर्मणोभ्रंशतेवायदधाभ्यातयत्युदकैरभिर्मिस्तन्यासादेन॥१५॥ वकश्रं
 माभविमिबिलतल्लोतिक्कावापिकृतलोतिक्कावापिकृतलोतिक्कावा॥२०॥ अमृणो
 मानकृत्कपथायैतददर्शमिउल्लिखतेमिवायातएनएभ्यामृवविनेममृण
 रोदयी॥ अरुणआतेवनोसासेकृन्नासानाजाईमासानोवकलोभवतिनेमृमाक
 पमार्यैतददर्शनननगणमभितिदीततिवाप्येननेनयोच्यमाणतगतिनेमृमाक
 कृणुवन्निवदृष्टशरीतासीतमस्यद्यावापृथिव्यामिवादि-वापिवकउच्यतेयुवाकृते ॥५५॥
 अतोहवीदसिदावातकावासास्तोयसीमहंतंरस्याःआक्षेपदुर्वाजाधितावा

त्येनाभिजसोतामस्वितोप्रमुनेवरिस्यास्यानेश्वापिरकउच्यतेविकर्तनातः। एकश्रि
 दस्यवारणउरासधिः। उरणसधिः। उरणउर्णावाभवत्कर्णः। पुनर्देवातरुणोतेवा
 वरुवागिअपिबकृच्यते। शतंमेघान्चक्रेवत्तदानमृजास्यैतंपितोर्ध्वकारयमित
 गमोभवति। प्रवाकेमिस्वयिजातनामयेयेतोपयितयामवति॥२१॥ यदेत्यासी
 सुतेपुवास्तवनेष्टताहवा। तोपवाकेवदतःवत्तहोहिषणानदेवारससथेभन॥
 यदेत्यासीसुतेपुवास्तामेस्तोत्रितस्याश्रीथायययेतोषवाकेवदतिविनेतपः। आर्नि
 तहोपिणोनदेवोतस्याश्रीथः। कृत्तिः। येततेर्यजोवान्वा। महीवकृत्तिः। गरणातदे
 सुमहन्तदेउरणमेतरिक्तकृत्तिरिवतीयमपीतराकृत्तिरेतस्मादेवस्रजमयु
 पमार्येवा। कृत्तिवसानआवरथिनाकेविभ्रदागहीत्यपिनिगमोभवति। अश्रीकि

नानितर्कमुपास्येत्स्वयंबलस्यपुत्रयानिधत्सेयत्रमंहसस्त्राणीअनुर्वाकवयंवा
 कवचैकृश्रितैमवतिकौचितैमवैतिकायेचितैमवातीतिवा॥२५॥ प्रीणीताश्चाहि
 तैलयाथस्वस्तिवाहैरयमित्कलुधं। जेणाहावमवममवक्रमंसत्रकोशैमवता
 न्वाणी। प्रीणीताश्चाअहितैजयथनयनैकोहितमस्तस्वस्तिवाहनैरथैकुरु
 धंजेणाहावैजेणदुममयैमयत्याहावआकानादाजहआवहनादयतोवाति
 तोमहाभयस्यमवक्रमशनवक्रमसनवक्रमितिर्वैमत्रकोशैमसत्राणिवःको
 शस्थानीयानिमैतुकोशःकुलातर्विकुषितोमबन्धयमपीतरकोशएतस्मादेवमैव
 यश्चावितमात्रेमहाभयतिमैवतन्त्राणीरूपकर्मणसंग्राममुपमिमीतेकाकु॥५७॥
 तास्त्रिभान्नतेतिक्काकोकुवासास्मिन्। यत्कोक्यसात्तावणैरुदतीतिगोकोक

यतेर्वास्याअदकर्मणोतिक्काजोडुयातालुतल्लेस्तीर्णतममैर्लतैर्वास्याधिपरी
 ताद्यथातल्लेत्स्याविषयः॥२६॥ सुदेवाश्रितिवरुणयस्मतेस्वस्तिमिधवः। अनुचरै
 तिकाकुर्दसम्यैसुपिरामिवा। सुदेवस्त्वैकल्याणदेवःकमनीयदेवःकमनीयदेवोवा
 न्वसिबेरुणयस्यतेस्वस्तिमिधवःसिंधुःस्ववणद्यस्यतेसप्रस्रोतोसितानितेकाकु
 दमनुचरैतिसमिक्कल्याणोमिस्त्रोतःसुपिरमनुयथावीरिठैतेरीकिरैतरिहृन्त
 माहसर्ववैतेरुन्नरमितरतेर्वयोसारेयस्मिन्भासिवातदेतस्यामृद्युदाहरैयनिगमो
 भवेति॥२७॥ प्रवाजेसुप्रयावहिरेषामाविशताववीरिठइयातेविशामक्तोरुष
 सःएवैद्रुतौवा॥२८॥ युःपूपास्वस्तयेनियुत्यान। प्रवत्येतेसुप्रायणवहिरेषामेजा
 तसर्वस्यपातारौवापालइतारौवावीरिठमैतरिहृन्मियोवाभासोवाततिरपिवा

शै० ८०

॥५८॥

पमार्थेऽप्याहर्षयतीत्यसन्नो वीरिदेगलमनुव्यालेसयात्रिहासेहर्षस्यामभि
 रूतौ वायुश्च निपुत्रान्द्रुपावस्त्वयनेयानिपुत्रोनिपुतोस्याश्चानिपुत्रोनिप
 मनाहानियोजनाहाहाभेराद्युमितिशाकपूणिः परीसीमितिआख्यातमेवने
 नाऽस्याऽप्यस्येतेनवकार्यातीत्यगिरंकुजोभवतिसरणादेकुशौनतेरा
 कुवितोभवतीतिना। नदीयदस्यप्यः पक्षमेयादिस्यपिनिगमोभवस्येतिगत
 ममुं कुशआहानान्तसोपधमागच्छत्वियागच्छति॥२८॥ सन्निमसध्वती
 नयस्यवराहोनाप्रतिष्ठापयित्रीद्रुत्वाकिमीतेअतनेअनपक्षयोनाममनु
 र्वश्यस्यराउतासिलइनेपक्षनवर्त्तपत्नीवंतः सुपुरसदृकध्वरमाऽ ॥५८॥
 रुणजापरिहाग्रीमानः समस्यहनिआमारः यथरुजापत्नीगीतसुदेवः

पवायनेहर्षिताते॥३॥इतिनेरुकेपैवताध्याय॥३॥आमचमयेकमित्त्वमाशुशुचि
 स्वमयस्वमयमनस्यरि। ल्वेनम्यस्वमोपध्याम्यस्वन्तलोन्पतेनायसेरुवि॥३॥मने
 कभिरहोमित्त्वमाशुशुचिगिराशुइतिवइतिवसिप्रनाममोभवतः सगिरुत्तरः सणा
 तेराशुशुवाज्ञेतातीतिवाशुकोनते। पवम्यर्थेवाप्रथमातथाहिवाक्यं
 सेयोगग्रहयाकारउपसर्गः पुरस्ताद्विधीर्षितजः उतरआशुशोवपिपुरितिशुचिः
 शुचतेऽर्चलतिकर्मणोयमपीतरः शुचिरतस्मादेवनिव्यक्तमस्यास्यापकमिति
 नेरुक्तः। ईरः अशाभ्यस्यरिसर्वाभ्योअर्थेकरत्। आशादिशोभर्वस्यासादना
 दाशाउपदिशोभर्वेयभ्यशनात्काशिर्मुष्टिः प्रकाशनामुष्टिर्तावनाक्षामोषणा
 द्वामोहनादाइमेविधिइरोदसीअपारेयसंगणमववन्काशिरित्ताइम

नै० पृ०

॥५६॥

विदिंजरोदसीधसीधावावधिबोविरोधनाशकः कूर्डनिहणादिस्मातः कूर्ड
जतेविपरीताहो जेविषययेपापारदुरपारयभीगण्णामिमववकाजिसमहा
चायहसमिरेनपिगकणरु। अहस्मिदुधुलोसपिठिपरिकणनमचै॥१॥
पाकातपावनेऽरेसजैमोः पुगहैतोभयमानोव्यागः सुगमयोः अकलोभिरजैगो
पावन्वाणीः पुरद्वैधर्मती॥ अलातणलसातदनामेवोपलोवणेतेर्जोत्रजस्य
तरिहो नारेनस्यामाध्यमिकापावावः पुराहननाइयमानोव्यागः सुगमयोः अक
पुणाहेजगाः सुगमनान्यपाकरान्तिगमनायगवाम्। पावन्वाणीः पुरद्वैधर्मती॥
आपावावहनाइपावावदनाइदुभिरादितमुदकेभवतिवर्मातिगतिकमी॥१॥
उदुहरचाः सदसुलोभैरवधामभ्यं प्रत्ययेवृणी॥६॥ आजीवतः मनसुकेवकव

॥५६॥

वसधिपेतपुधिंइतिमस्याउदररुः सहस्रकर्मिदम् लेमोवनादामोघणादामो
ननावाह्येधर्मप्रतिष्ठणीयप्रमयमागतैभवत्याकिचतोदगात्सल्लुकेनैरुदम
वतियापकमितिनेरुक्ताः सररुकेवास्यासेरैरस्यस्तात्रपुपिस्तपतेहेतिहेतः। म्य
विदिन्याकसार्धजायानैमुखपयसंमुखमस्यपयः विस्तुहआपोभवतिविस्तव
णातवयाउवरुदुः सप्रविस्तुहइत्यपिनिगमोभवतिरुधेक्यमनोभवतिविग
दणतावीरुयः पारपिष्ठइत्यपिनिगमोभवतिनसदाममश्रवानदाभमभ्यश
नेनदाभोतीतिनसदामैतनुरिपर्वतंइमिस्यपिनिगमोभवत्यस्तुवायुरकंधा
पुः कश्चित्दुस्वनामनिकर्तैभवति। यो अस्तुवायुरजरः स्वगानित्यपिनिगमो
भवतिनिर्गमानिश्रयदुरिण॥३॥ आतामः पूषणैरथैरिशभास्तनश्रियो

न०२०

॥६०॥

दवेवहेतुविभक्तः। आवहेत्तनाः। एषोऽपि रथे निश्चयः। हरिणस्तत्र श्रियं ज्ञात श्रियं कुरु
वदुःखामहदुःखं। वक्तव्यमस्मात्। कर्मिति वदुःखं। वा। वदुःखं। वदुःखं। वदुःखं।
उत्सपि निगमो भवत्यदुःखः। सोमो मद्दुःखं। मद्दुःखं। मद्दुःखं। मद्दुःखं। मद्दुःखं।
स्यासवेयस्यपि निगमो भवत्यदुःखं। पेदुःखं। परि। परि। परि। परि। परि। परि।
रुक्तामः। पुलुकामो हि मर्त्य इत्यपि निगमो भवत्यदुःखं। न्वती। अस्मिन्मर्त्ये ती। अस्मि
न्यती वप्सती मर्त्ये तदुःखं। इत्यपि निगमो भवति। कपनाः। कपनाः। कपनाः। कपनाः। कपनाः।
थाय। कपने ववेधस इत्यपि निगमो भवति। ना। ना। ना। ना। ना। ना।
तुः। समिधामा। अली। कइत्यपि निगमो भवति। रुक्ता। नान। नान। नान। नान। नान।
लोनि। मरुत्तानाः। पिपि। पदं। इ। ज। तुरि। त्यपि निगमो भवति। ज। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि।

॥६०॥

वतेर्वाह्नोतेर्वा। हि। ज्ञातु। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि। र्जि।
वां। वयो। गात। पर्यगा। ह्यै। सम। हर। वने। नान। ॥५॥ उ। पत्त। प्रहि। व्यु। पत्ते। पि। प्रहि।
गा। व्यु। पत्त। प्रहि। पि। पि। पि। पि। पि। पि। पि। पि। पि। पि। पि।
वा। वने। क। रः। शाकिनी। गा। वा। जाल। मस्य। दने। वन। मुदधिः। पूर्वतो। रा। ता। दुर्भि। सि। ले। न।
वरुत्त। यइति। सा। नि। गद। व्याख्याता॥५॥ कारु। र्इर। हंत। ता। मि। षगु। पल। प्रहि। णी।
नना। नानाधि। यो। वस्त। यो। नु। गा। इ। वने। स्थि। मे। ये। दो। परि। स्त। वा। कारु। र। ह। म। स्मा।
तिकर्त्ता। स्तो। मानो। ततो। मि। ष। क्त। तइति। स। ताननाम। षितु। वो। पुत्रस्य। वो। पल। प्रहि।
णासक्तु। करिका। नान। नमेते। माता। वा। दु। हि। ता। वाना। ना। धिया। नाना। कर्मा। णो। वस्त।
ययो। वस्तु। कामा। अन्वास्थिता। स्था। गा। वइव। लोकमि। शये। दो। परि। स्त। वस्तु। ध्ये। ध्ये।

नै०८०

॥६२॥

निविलतिज्ञाने वलनिष्ठमाणे च ते वर्यभागमध्यायेमौजसावले नौनउत्तते
 नौज्वले वागीकाशश्च यणद्राप्रपणाद्राथेयमितरागीराशास्तेः॥इत्येवगावः
 न्याहिरमियापिनिगमोभवतिमामेसत्यागीदेयधितिवा।यदातेमजोअ
 नुभोगमानतादिदुसिष्ठयाधधीरनीगः।यदातेमतीमोगमन्यापदथअसि
 नूनमजोपथीरगरीज्ञगर्जितिरतिकर्मावागुणतिकर्मावागुल्लातिकर्मा
 वागुमराअमूरनवयविकिजोमदिलमनेत्तमंगविरये।नृमोववैमाम्
 केत्वमसिनवयविकिजोमदिलमनेत्तमंगविरये।नृमोववैमाम् ॥६२॥
 वंजेराजमानोदकाज्ञानेन्यधितिगमोभवतिदेवोदेवाच्चाकपादेवोदेवा

अन्वक्रवाकपाकरुं पतेवोक्त्यतेवा॥८॥ अश्ववैरिभरिदावन्नगवीविना
 मातुरुतयाथाप्यालोरे।अथानामस्यप्रपतीपुवभ्यामिजग्नीस्तामंजनयामि
 नव्योअश्वोपदिबद्धदातृरोवीयितामादुरसुसमाप्राप्तामातुर्विज्ञामातेति
 शश्वदाक्षिणत्वाःक्रीतापतिमावक्षतेसुसमापुइववरोमिप्रतोतामाताता
 अपत्यंतेनिमातोतवाथास्मालादपिवस्यालास्मालआसन्नःसंयोगेनेति
 नेकाताःस्याज्ञानावपतीतियालातालातेस्यंश्रुपेस्यतेःश्रुपमशनपव
 नेश्रुणतेःसुम्रातेर्वाथसोमस्यप्रज्ञानेनयुवान्यामिजग्नीस्तामंजनयामि
 नव्यो।नवतरमोमासइत्यपरिशुद्धारव्यास्याम॥८॥।सोमानैस्वरणेरुणु

नै०२००

॥६३॥

हित्रस्यस्यते। कसीवैतयशोशिनः। मोमाजसोतारं प्रकाशनवैतकुसुमस्य
स्यते। कसीवैतमिवयशोशिनः। कसीवानकस्य। कसीवैतशिशिनः। एतज्ज
स्वयेः। कौतिकर्मणोपिन्धयेमनुष्यकहापुकातिप्रेतस्यानैसो। जानैसोतारंमा
प्रकाशनवैतकुसुमस्यस्यते। ॥११॥ ज्ञेयस्य। मासमद्यशेसमभ्य। चेतपुर्य
प्रकवरुरशिनोदका। प्रयदिपेकस्यविचारय। कासीवैतस्य। प्रयस्य
किन्नीदिन। इशसोमा। लप्यस्य। शीसितारस्य। चेतनि। कति। तोयस्य। जादे
तीति। तउ। लपे। नै। मरुये। चको। लपति। प्रयतवो। लपु। चरे। यत्मा। जा। का। लप्य
प्रयस्य। तउ। देत। स्या। दकस्य। मदनै। चोरय। लप। चार। रस्य। ना। य। के। लो। वि। के। नै

॥६३॥

ज्ञानमजतिनैरुक्ताहोपोयनमनवायमनवर्थे। यदन्तनयवेयुरदेपसजति
वाकिमिदनेकमिदानीमिति। नरतेकिमिदं। किमिदमिति। वापि। धुना। यनरते। पि
धुनः। पिशते। विधिं। अतीति। ॥१॥ कणुषपाजः। प्रमिति। न। ए। धी। वा। हि। रा। जे। वा। म। वा
दने। ना। त। ची। मनु। प्रमिति। ह। ण। ने। स्ता। सि। वि। ध्य। र। स। स्त। पि। छुः। कणुषपाजः। पातः
पातना। प्रसिति। मि। व। ए। धी। प्रसितिः। प्रसहजा। तै। तुर्ना। जालं। वा। या। तिर। जे। वा। मा। न्य। वा
नन्यमनवा। त्रयवा। न्वे। रा। म्। ता। ग। ले। न। गत। मये। न। रु। स्त। ने। ति। का। ह। थ्य। नु। प्रमि। न्या
लुणनस्त। ची। ति। सि। प्रनाम। तरे। नै। र्वा। ल्य। रते। र्वा। अस्ता। सि। वि। ध्य। र। स। स्त। पि। छुः। स्त
धैतमे। स्त। प्रतमेः। प्रतिष्ठतमे। रिति। या। यस्ते। ग। मं। म। मा। वा। दु। ण। मा। यो। नि। मा। शे। या।

नै०५०

॥६५॥

अमीनाभामनेन मारयातो दुर्गामाकिमिर्नप्रतिपापनामाकिमिकथ्यमे
पयिक्रमतेतस्यास्मरणकर्मणःक्रमयतेवाक्रमतोदुरितानिधिशाभति
क्रममातादुर्गमिगमनानिसकथयथायदनयाविद्वोपवीचनयापिर्नमयेवा
अर्थेपण्योत्यपितिगमामवत्यमितिस्मामयीमतिरुत्तममयीकुर्वायस्याय
तिर्नयिद्युतस्सवीमतीत्यपिनिगमामवतिथ्यपीतिसिप्रनामाशुअपी
ति॥२॥तोअचरउशतोयस्यमेअपीमगनासत्यापुरंजितानवरप्रलउश
तःकामवमातात्यजायेअपीमगनासत्यावाश्विनामन्याप्रवनासत्यावि ॥६५॥
त्योर्वाशमःसत्यस्यपणिताराकिन्यायापणनासिकाप्रभवोवभवतुगितिवा

पुरंप्रवडुपीकःपुरंधिर्नमःपुरस्तातेत्यान्यादृशरम्यकभिरेअचरंअवडुक
मंतमःपुरचदारइत्यतमावसुणइत्यपरंतपमपतामीमासुलुकावितमस्यमा
यामिसापिनिगमोभवतिक्रशदितिवर्णनामरोवतित्वेनतिकर्मणःमसिदस्य
इतीददशिपात्रइत्यपिनिगमामवति॥१३॥आसहिबःसजास्मेरिजटसादया
लोअस्यप्योअसिहिबःसमानजातिरुशमदासिनोदेवाअस्याप्यमा
यमात्रोतःसुदत्रःकन्यादानःलुथास्युदकाविदयातुरावइत्यपितिगमाम
वतिसुविदत्रःकन्याणयिकःअनेयाहिसुवविदत्रेभिरयोजित्वापिनिगमो
भवत्यानुषगितिनामानुषवस्यानुषकैतवतिस्मर्गतिर्वाहिरनुषगित्स

नै०६०

॥६॥

पिनिगमोभवति तुर्वणिस्फूर्णवनिः॥सतुर्वणिर्महोअरेणुपौस्यरस्यपिनिगमो
भवतिगिर्वणादेवोभवतिगीर्निरेनेवनयेति।लुपेगिर्वणासेवहदित्यपिनिग
मोभवति॥१४॥असत्संस्तरत्तसिनिघनेयत्तानिससकृण्वेनिमानि।
असुसमीरिताःसुसमीरितेर्वातसमीरितामाज्यमकादेवगणायिरसन
द्विबीनपयैतात्तानिचक्रुर्केतितत्तायज्ञैतेत्यतिक्रौतेप्रतिवचनैःअम्भ
क्मातरेरुक्चिः॥अनाकेवाभ्यकेतिवा।भा६उमेधाधितमपस्ययाविदत्।
या६उमेधाधितमपस्ययाविदत्।उस्रःपितेयज्ञागधियज्ञैः॥उस्रउपजा ॥६५॥
पितामायिवज्ञैः॥१५॥अवोक्ताहुहुधाणासोअत्तुरभूतविश्वेअश्रियोत

वानः॥आस्युजोमोषयमाणाअभवत्सर्वेयगणेनेतिवायमं
पादिनइतिवापिवाग्रमित्येनदनर्धकमुपवैयमाददीत।आद्वीर्इप्रस्थिते
माहमीधिवनोदधिप्रपचतोतसोमो।आद्वीर्प्रस्थितानीमानिहवीधिवनो
दधिप्रपचतइत्यन्तनामपचतिनामीभूतसंसेदस्तःप्रतिपचतायमीशानि
त्यपिनिगमोभवत्यपिवासेदसश्चपजाश्चसालेद्विवचनेम्याघत्रयैकवच
नार्चःप्रसिद्धतत्त्ववतिपुणेकाअत्रपवतइतियथाशुरुय आपोभवतिशु
चैसंरुर्जेति।अतस्यहिशुयःमेतिद्वैरित्यपिनिगमोभवत्यमिनोमितमा
त्रोमहाभवत्यन्यमितोवा।अमिनःसहोमिरित्यपिनिगमोभवतिज्योती

ने० २०
॥६६॥

रावोमवेनिगष्टकारिण्यः सरुताजसतीरिवेयपिनिगमोभवत्यप्रतिबुतोप्र
तिस्कोप्रतिस्वलितावा। अस्मभ्यमप्रतिबुतउत्पिनिगमोभवतिशोभा
नःशावाद्यमानः। प्रचीमातमतिरुतादानमिन्त्यपिनिगमोभवति॥६६॥
स्यःसर्पणादियमपीतरनरप्रतेनस्वादेवस्वधिवातेनैवा। सप्रकरस्मयत
यइसापिनिगमोभवतिक्वमुदा। कर्मणाप्रकातांगसुशिष्येतेन।
स्मातैवाजमुशिष्योसती। अपिगमोभवतिशिष्यरुननामिकेवाहनुमतेना
पिकानसतेः। विस्वाशिष्यविस्ततस्वधेनैवत्यपिनिगमोभवतिधनाद॥६६॥
तिरैश्वर्याणां। सविनेणनिकेतं सुभासेस्यपिनिगमोभवतिविद्वान्माकाज

द्योपिबन्धमध्यमेवस्वानुतेमपाउतदिवर्त्तुअभिनःसहोसिरिः। अपिनिगमोभवत्य
क्रमणर। अक्रोनवन्निःसमितेमहीनामित्यपिनिगमोभवत्युराणाउरुनुर्वाणगहूतर
यसेप्रदिवउराणोइत्यपिनिगमोभवतिसिया। आपोसवेतिस्यायनार। वपासिध
नौवृषभसियानामित्यपिनिगमोभवति। सपस्तासोपापालनउपरिहतांवायवा।
तिवामनस्तिपाउतप्रवतनपाइत्यपिनिगमोभवतिजवारुजवमानगाकितरमा
णराकिगरमाणरोहीतिवा। अयरुपआरुवित्तजवार्यित्यपिनिगमोभवतिजस्तु
गरुथैगकृतिः। जस्तुथैहयसिरायेपुरेधिमित्यपिनिगमोभवतिकुलिशइतिव
व्रनामकूलशातेनोभवति। स्कंधोसीवकुलिशेनाविवृणाकिःशयतउपपृक्
पृथिव्या। स्कंधोवृक्षस्यसमास्कनोभवत्ययमपीतरः स्कंधेएतस्मादेवास्कन

नै० २००
॥ ६७ ॥

कोयदिः शयत उपपर्वनः पृथिव्या स्मृतं जन्ते दानं कर्मणः ॥ १७ ॥ तु ते तु जेय
उत्तरे स्तोमा उरस्य वलिणः न विंये अस्य सुष्ठु ती। दाने दाने यत्तरे स्तोमा
उरस्य वलिणो नास्यते विं दामि स मा रिं स्तुतं बं हं णा परि व हं णा व हं हं वा अ
संशय नै णा कृतं अयि निगमो भवति ॥ १८ ॥ वा अस्मै अस्मै म उत वा य उ य नि सा
मै सु ना ति न व ति धृ म् अस्मै अस्मै पा प श क्तः जन्ते उष्टि म् रु ति त न् रु श्मै म प व
य क वा ल खः ॥ १९ ॥ इत्येकं न म य स्य ते स्मिन् लला गे रु य उ य त त सो न व त्क
पा न्द म भि ति वा ल्ने हानु प्र दान स्या म्य न्या ॥ २० ॥ अथ उच्यते त धार मा न्ये
न न्य पि वा रा त्रौ पो मै सु ना ति न व त्क न्या त न वा न या रु स्य पा रु नि श क्त स्त
ति नु ॥ २१ ॥ म र्त्ताना द प त म नै के रि श्म म य त्वा नै त न् रु श्मै त न् रु श्मै यि ता

॥ ६७ ॥

र म य वा यः कृ णा रा खो जः स न्द ह्योः स्त र वा यः न्या वि ध्य दि नी ॥ २२ ॥ अस्मै दत्तु वा नि
विं दामि म ति न् रु श्मै रुः ॥ न्या वि ध्य दि नी वि श य स्य दत्तु वा नि विं दामि म ति न् रु श्मै रुः ॥ २३ ॥
अस्मा इ दु प्र भ रा ल न् रु ना नो रु श य व ल्ने म शानः किये यो गो
नै प नै वि र या ति र् रु श्मै नै नै स्य पो च र् रु थ्य ॥ अस्मै प्र रु र् रु थ्ये स्त र मा णो रु श य
व ल्ने म शानः किये ध्याः ॥ किये द्वा रु ति वा क्त म मा ण धा उ ति ता गो रि प णो वि वि र
द मे प श्वे प्य न् रु नै च र् रु ण य म् मि म्य ते ॥ २४ ॥ अस्मै र् रु थ्ये प्य क्त म् र् रु थ्ये ना ति य पि नि
ज म् मि न व ति वि धि ता ति प्रा म्नः ॥ पा र त्रौ अ स्य वि धि त स्य प र् रु थ्ये ना ति य पि नि ग म्
भवति ॥ २५ ॥ त न् रु श य म् रु ते पुरु कारं पुरु त्म ना ॥ त् रु थ्ये पा य वि प्य त् रु रा
य ना म् मि ना अ स्मा युः ॥ त न् रु श य म् रु ते पुरु कारं पुरु त्म ना ॥ त् रु थ्ये पा य वि प्य त् रु रा

॥ ईद ॥

यविष्यत्वित्यस्मयुरस्मान्कामयमानोरास्यनोस्यारपेतवारसतेवारापिनम्या
योऽरित्यपिनिगमोभवत्येतातिः प्रयाधनकर्माः प्रावर्जंनसउत्तौयुष्टिनि
यपिनिगमोभवत्येतातिः प्रयाधनकर्माः प्रावर्जंनसउत्तौयुष्टिनि
भवतिब्रह्मस्तानवस्तदराजैः प्रतद्वस्तुमिस्वरस्यपिनिगमोभवति॥२॥
हिनातानोनाधरैदेवयत्यादिनातजस्यसनेयधनानोऽतस्वयोगेविष्य
धर्मधः अदीवरीर्भतनास्मभ्यमापः॥प्रक्षिप्युतनाधरैदेवयत्यायेततंप्रति
यतवस्तुधनस्यसनेनायकतस्यधागयतस्ययोगेयानशकुपडतिवाशवे
वैशकुदितैर्नवातिशक्तैर्तिशयवतिगनकैस्तकतीतिवाशयेनतकतीतिवाशु
दीवरीर्भतनास्मभ्यमापः॥सुखवत्यानवसास्मभ्यमापः॥नोसुरमापमरे

॥ ईद ॥

हरिवामोदददिद्वद्वननीयं॥एधमानद्विलुप्तयस्यराजाकोष्कयतेविवादेऽं
मनुष्यानायुदस्यस्येयमानानहद्वस्यसुचतः सुचतोभ्यादभासुप्तयस्यराजा
द्विष्यस्यसपाधियस्यवकोष्कयमाणश्चोष्कयतरतिस्कुनतेअर्करीतरत्तैसु
मत्स्यमिष्यधः॥उयप्रागात्समसेयायिमना॥उपेनुमास्वयेयमभायिपुलेनेया
धमेधिकोमैत्रादिविष्टिपुदिवगपणेपुस्वरंगधःशतासंकुरुंगस्यदिविष्टिपु
स्वरःमाश्रितमात्रोमहाभवत्येपुरलुस्ववीयोसमुयस्यसंगेलुजनामकरणे
यथासेप्रतिहुरंगोराजावभवकुगमनाद्वाकुरुःकृततेःकुरमित्ययस्यम
वतिहुरंगेकृष्णातेर्विकुषितंभवतिहृतोव्याख्यातोतिन्यतिःप्रीतिकर्मा॥

1020

॥३॥

भिपत्तन्यानिर्वादिर्वैतिन्यययउत्पिनिगमोभवति॥२२॥अमजोमात्रो
 महान्नवात्सम्यमितोवा॥महोअमजोवृत्तनेविरुपीत्यपिनिगमोभवतिस्त
 ववन्त्यत्रीपमः॥सुयसेवत्यत्रासमानर्जरातिमङ्गीलदानमश्लालपापक
 मश्लिमक्षिपमो॥अनर्जरातिवसुदा॥मुपस्तहीत्यपिनिगमोभवत्यनत्रो
 पत्यतोन्त्यमिन्न॥अनर्जरातिवसुदा॥मुपस्तहीत्यपिनिगमोभवत्यनत्रो
 अनर्जरातिवसुदा॥मुपस्तहीत्यपिनिगमोभवत्यनत्रो
 वा॥वृद्धस्यतिवृद्धयानयमर्कः॥अनर्जरातिवसुदा॥मुपस्तहीत्यपिनिगमोभवत्यनत्रो
 दनतिवृद्धयानयमर्कः॥अनर्जरातिवसुदा॥मुपस्तहीत्यपिनिगमोभवत्यनत्रो

विजतिषिद्धं तानि नित्यं तः अस्माभ्यो तो विप्रश्चो सुदानवः ॥ अस्तु मया प्रैवल विप्र
यकं न्यायं दानाः ॥ २३ ॥ मात्मानो मस्य गन्तव्यं सदा यत्नेन हे गिरा ॥ हर्षिर्मर्गं न स
वेन पुत्रु कुर्ध्वं कर्दं गानेन या विप्रनाम तु कुर्ध्वं त्वा सो मस्य गन्तनेन वदा यत्नेन
हर्षि रागी त्वा मात्माना हर्षि मित्रं स वत्सवने पुत्रु कुर्ध्वं कर्दं गानेन या विप्रती
निगन्ता धर्मं न धर्मं विप्रं न मात्मानं यते ॥ या न्या विप्रो न्निदं श्रामन्त्या धर्मनी
नां ॥ नाना विप्रं कृत्येते येत श्रामनेना धर्मनी नामि न्य श्रार्थं ॥ २४ ॥ न पापानां
सन्नामहे नारायणं न तत्कृत्वा ॥ न पापामन्यामहे नाधनान्त्वं न न होनाश्र
स्वात्मा सुखं न च यमं यत्नेन तपोदानकर्मैः पिरवो न द्वकुरो मा स्करोम य

11504

[illegible][illegible]

नै० २०॥ क्विदंतीविकर्तनदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७२॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७३॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७४॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७५॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७६॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७७॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७८॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥७९॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति
 ॥८०॥ क्लृप्ततीक्ष्णदंतीयत्रावादिदुर्दक्षिक्रिदंतीयपिनिगमोभवति

[illegible]

नै०४०

॥७३॥

अथैवधिनोहरवधिनोवा॥३३॥निराविध्यद्विधियःश्रा॥अथ॥निराविध्यद्विधियःश्रा॥
यस्यसक्तोदनमुदकशनेमेवमिजोवृंदंस्वातते।वृंदंदेवदेनयाग्यातेवृंदंकारक॥३४॥
अथैवधिनोहरवधिनोवा॥अथैवधिनोहरवधिनोवा॥अथैवधिनोहरवधिनोवा॥
दतिपत्तमस्यवैदिकयाअहरदत्तायतेमासेमासेदुमालेवाथदेवाविदधिरुदयनाम
वाहमुत्तमस्योतयो।महामुत्तमस्यविरुतदसीदियुपिनिगमाभवन्वीसमपग
ममासमपवित्तासमपस्तमासंगतमासेवा॥३५॥हिमेनाग्निर्धौपमवार
यधौपिकुसतीसृज्जमस्माअधनै।अथैवधिनोहरवधिनोवा॥अथैवधिनोहरवधिनोवा॥
सर्वगणेश्वरिणाहिमेनोदकेनश्रीश्रीतिग्नेचसमरुग्गारमथामन्तवर्तते॥७३॥
स्माउज्जैमधनमपयकोपमवीसवधियासंततरोपधिवनस्यतिष्ठसु

तमेनिन्यधुःसर्वगणेश्वरिणाहिमेनोदकेनश्रीश्रीतिग्नेचसमरुग्गारमथामन्तवर्तते॥७३॥
आगिनश्चैवधिनोहरवधिनोवा॥अथैवधिनोहरवधिनोवा॥अथैवधिनोहरवधिनोवा॥
आध्याय३॥॥स्ममयेतात्तुगुह्यज्ञासुउपलब्धिणीकाररहस्येतेथा
यंतदुवाअवैदिसामानमिजसोमासमपयसैकगुह्यतोअधेरसिद्धिवा
एतेप्रवोक्तस्यसुतेतुनेयोअस्माअस्माइदुप्रभरतनस्तुरापरिहि
नोतातोमत्रोमात्मानयापासोयवैवकेणजीवान्नावतोयेनुंनोरायिका
एवामेवामेकिंतेतुविज्ञतेनिराविध्यदयेयोहिमेनाग्निपटुत्रैश्वर॥३॥
॥॥इतिपूर्वपटुःसमाप्त॥संवत्१६००समयेशुक्रसंवत्करावधेय॥